अधिगम के लिए मज़ेदार तरीक़ों का उपयोग

अंकित शुक्ला

कक्षा में सीखने के लिए शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को निरन्तर प्रयास करने पड़ते हैं। इसके लिए एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता होती है जो प्रेरणा प्रदान करे क्योंकि दिए गए कार्य की प्रकृति, शिक्षार्थियों की अपेक्षाएँ, जानकारियों को प्रस्तुत करने के तरीक़े- इन सभी का प्रभाव अधिगम पर पड़ता है। हम बड़ी आसानी से यह देख सकते हैं कि अधिगम के विभिन्न आयाम कौन-से हैं और उदाहरणों, अधिगम की गतिविधियों तथा बच्चों द्वारा अपने अधिगम को संसाधित करने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले विभिन्न तरीक़ों की मदद से अधिगम कैसे होता है। मुझे लगभग तीन साल तक अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ जुड़ने और जिले के कई स्कूलों का दौरा करने के बाद इन सच्चाइयों का एहसास हुआ।

2019 में, छत्तीसगढ़ सरकार ने कहा था कि गर्मियों की छुट्टियों के दौरान स्कूलों को खुला रखा जाए और स्कूल में ही ग्रीष्मकालीन शिविर में विभिन्न मज़ेदार गतिविधियाँ करवाई जाएँ। परिणामस्वरूप मैं उन तीन स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ जुड़ सका जो एक ही परिसर में थे। जैसे ही मैं स्कूल पहुँचा, विद्यार्थी मेरे पास ऐसे आए जैसे हम पुराने मित्र हों। कुछ लड़के फुटबॉल खेल रहे थे और कुछ क्रिकेट में व्यस्त थे। हैरानी की बात यह थी कि खेल के मैदान में लड़कियाँ नहीं थीं। वे सभी अपनी-अपनी कक्षाओं में थीं।

हम प्रधानाध्यापक के कार्यालय में गए। उन्होंने मेरा स्वागत किया और कुछ लड़कों से हॉल खोलने के लिए कहा। विद्यार्थी हॉल में इकट्ठा होने लगे और कुछ ही मिनटों में हॉल लड़कों एवं लड़कियों से भर गया। मैंने अपना परिचय दिया और अपने स्कूल आने का उद्देश्य उन्हें बताया।

वातावरण में बदलाव

पहले दिन मैंने उन्हें समूहों में विभाजित किया। हमने दस समूह बनाए और प्रत्येक में लगभग नौ विद्यार्थी थे। मैंने प्रत्येक समूह को कहानी की पुस्तकें दीं और कहा कि वे उन्हें पढ़कर आपस में चर्चा करें, जो पात्रों, कहानी (कथानक), संवाद आदि पर हो सकती है। इन चर्चाओं के आधार पर उन्हें एक नाटक तैयार करना था। समूह के प्रत्येक सदस्य ने कहानियाँ पढ़ीं और फिर चर्चा और आम सहमति के बाद उन्होंने नाटक का अन्तिम प्रारूप तैयार किया।

दूसरे दिन सब लोग बड़े समूह में मिले, अपनी-अपनी कहानियाँ साझा की और उनमें आने वाले विभिन्न चरित्रों/पात्रों के बारे में बताया। इस सारी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हमने कठपुतली का कार्यक्रम आयोजित करने की सोची।

कठपुतली का कार्यक्रम

इसके बाद वे अपनी कहानियों के लिए कठपुतलियाँ तैयार करने में लग गए। विचार यह था कि पहले, पात्र के चेहरे का चित्र बनाया जाए, उदाहरण के लिए, अगर कहानी में एक शेर का चरित्र था तो उन्होंने शेर का चेहरा बनाया और उसमें रंग भरा, फिर उन्होंने कठपुतली को सहारा देने के लिए उसे गत्ते के एक टुकड़े पर चिपकाया। चिपकाने के बाद उन्होंने कठपुतली पर एक पतली छड़ी लगाई और बस, उनकी कठपुतलियाँ प्रदर्शन के लिए तैयार हो गईं। तीसरे दिन हमने अपना नाटक प्रस्तुत किया।

मंच तैयार था। विद्यार्थी छड़ी वाली कठपुतलियों को पकड़े हुए पर्दे के पीछे खड़े थे। वे इस तरह से खड़े हुए थे कि केवल कठपुतलियाँ नज़र आएँ। प्रत्येक समूह ने एक-एक करके अपना नाटक प्रस्तुत किया। पहला नाटक था 'ईमानदार लकड़हारा'। विद्यार्थियों ने हर बारीकी को ध्यान में रखते हुए नाटक को ख़ूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया। प्रस्तुति के बाद प्रत्येक प्रतिभागी ने अपना और उस पात्र का परिचय दिया जिसे वे निभा रहे थे। प्रदर्शन के बाद नाटक पर सवाल-जवाब का दौर चला। कुछ सवाल उठाए गए– जैसे, अगर आदमी सभी कुल्हाड़ियाँ ले जाता तो क्या होता? उसने लोहे से बनी कुल्हाड़ी क्यों चुनी? इसके बाद जो चर्चा हुई उसने इन विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की घटनाओं के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया।

अगला नाटक था, 'बड़ा कौन'। कहानी का सन्देश, जो दर्शकों की ओर से ही आया, यह था कि अपने आकार के कारण किसी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। पृथ्वी पर प्रत्येक जीव समान सम्मान और गरिमा का पात्र है। कठपुतली के प्रदर्शन के बाद विद्यार्थी बहुत उत्साहित और ख़ुश थे।

बाल-अख़बार

अगली गतिविधि के लिए मैंने बच्चों से कहा कि वे अपने गाँव में होने वाली कुछ नई चीज़ों का अवलोकन करें। अगले दिन उनके पास हमें बताने के लिए बहुत कुछ था। इसलिए मैंने पहले एक समाचार पत्र के विभिन्न हिस्सों पर चर्चा की जैसे समाचार, रिपोर्ट, विज्ञापन आदि। मैंने उन्हें फिर से समूहों

में विभाजित किया और उनसे कहा कि उनके पास जो भी समाचार हों, उन्हें लिखें।

यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि बच्चों ने छोटी-से-छोटी बात को भी बहुत ध्यान से देखा था। कई विद्यार्थियों ने पिछले

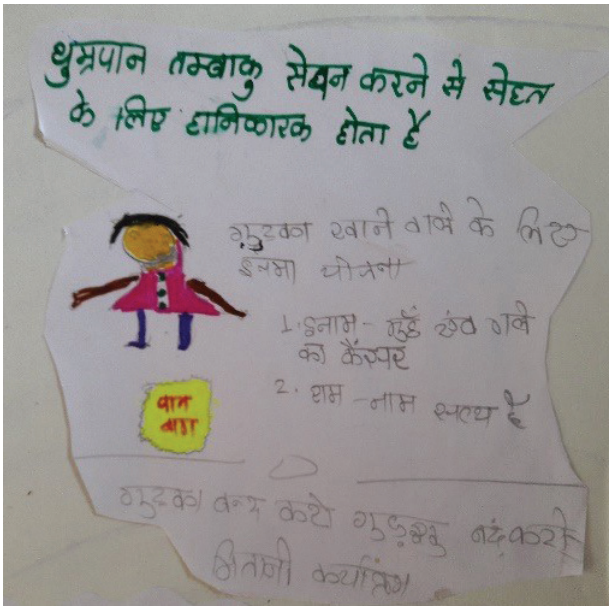

दिन हुई मूसलाधार बारिश के बारे में लिखा था। उनमें से कुछ के माता-पिता की सब्ज़ियों और फलों की दुकान थीं, उन्होंने लिखा कि इस बारिश का उन पर क्या प्रभाव पड़ा।

फिर विज्ञापनों की बारी आई। कई विज्ञापन थे– शैम्पू, दवाइयाँ और यहाँ तक कि स्कूल के एक विज्ञापन में वहाँ पर दी जाने वाली सुविधाओं पर भी प्रकाश डाला गया था। जिस विज्ञापन ने मेरा ध्यान खींचा, वह था तम्बाकू का विज्ञापन जिसमें धूम्रपान की बुराइयों के बारे में बताया गया था।

विद्यार्थियों से इन्हें एकत्र करने के बाद, अगला चरण था एक समाचार पत्र के रूप में इन्हें 'प्रकाशित' करना, अर्थात इन लेखों को एक चार्ट पेपर पर चिपकाना। यह कार्य करने के लिए एक टीम भी थी, जिसे 'प्रकाशन टीम' का नाम दिया गया। इस टीम की यह ज़िम्मेदारी थी कि वह समाचार पत्र को डिज़ाइन करे। उन्होंने चार्ट पेपर पर समाचार और विज्ञापन चिपकाए। अब हमारे पास अपना बाल-अख़बार था, बच्चों द्वारा बनाया गया अख़बार! जब इसे प्रदर्शित किया गया तो बच्चों को बहुत बड़ी उपलब्धि का अनुभव हुआ।

बच्चों ने क्या सीखा

इन गतिविधियों के बाद शिक्षकों और मैंने देखा कि अब विद्यार्थी ख़ुद को अधिक-से-अधिक व्यक्त करने लगे थे। इन गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का मौका मिला था और इसने उन्हें अपने विचारों को सबके सामने रखने का आत्म-विश्वास दिया था। कठपुतली प्रदर्शन के लिए किए गए पूर्वाभ्यासों (रिहर्सल) से उनके मन में यह भावना जगी कि उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए। उन्होंने अपने तरीक़े से कहानियों में सुधार किया जो भाषा सीखने का एक अच्छा तरीक़ा बन गया। कठपुतली के प्रदर्शन से विद्यार्थियों को मानसिक छवि निर्मित करने में सक्षम और अधिक रचनात्मक तथा कल्पनाशील बनाने के भाषा-शिक्षण के उद्देश्य भी सम्भवतः पूरे हो सके क्योंकि विद्यार्थियों ने प्रदर्शन करते समय अपनी कल्पनाओं और अपने विचारों का प्रयोग किया था।

बाल-अख़बार गतिविधि ने विद्यार्थियों को अधिक सचेत रहने और बारीकी से अवलोकन करने की शिक्षा दी। उन्होंने अपने आस-पास होने वाली हर घटना की, हर उस बात पर बारीकी से ध्यान दिया जिस पर आमतौर पर किसी का ध्यान नहीं जाता। चार्ट पेपर पर समाचारों को चिपकाने से उन्हें अपने स्थानिक ज्ञान का उपयोग करने में मदद मिली जिसका उपयोग गणित के शिक्षण में किया जा सकता है। समाचार और विज्ञापनों के रूप में अपने अनुभवों को व्यक्त करने से उन्हें अपने विचारों को सामने रखने का मौका मिला।

इन सबसे मुझे यह समझने में मदद मिली है कि अधिगम कहीं भी हो सकता है : फिर चाहे वह कक्षा हो या खेल का मैदान। हमें केवल एक चीज़ का ध्यान रखना है और वह यह है कि हमें कक्षा का वातावरण शिक्षार्थियों के अनुकूल और पूरी तरह से भयमुक्त रखना चाहिए। प्रत्येक बच्चे को किसी भी मंच पर ख़ुद को व्यक्त करने के लिए उचित स्थान दिया जाना चाहिए और तभी अधिगम भी होगा।

References

What Did You Ask at School Today? Kamala Mukunda

How People Learn: Introduction to learning Theories; developed by Linda-Darling Hammond, Kim Austin, Suzanne Orcutt, and Jim Rosso

अंकित शुक्ला 2017 में फेलो के रूप में धमतरी में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ जुड़े। वर्तमान में वे रायगढ़ ब्लॉक (छत्तीसगढ़) में हैं और गणित विषय से जुड़े हुए हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ से एमबीए और बीटेक किया है। फाउण्डेशन में आने से पहले उन्होंने भटिंडा में पंजाब और हरियाणा के कपास की खेती वाले जिलों में बाल अधिकारों की सुदृढ़ीकरण परियोजना में कार्यक्रम प्रबन्धक के रूप में काम किया है। वे भारत के तीन राज्यों में तपेदिक और डायबिटीज़ मेलिटस के बीच अन्तर-सम्बद्धता पर जागरण पहल द्वारा मल्टीमीडिया अभियान में जिला परियोजना समन्वयक के रूप में भी काम कर चुके हैं। उनसे ankit.shukla@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल